

## नौकरी की किताब

### सत्र 24: नौकरी की किताब में नौकरी

#### जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 24 है, नौकरी की किताब में नौकरी।

#### **परिचय [00:21-00:45]**

अब हम अय्यूब की पुस्तक के कुछ पात्रों पर एक प्रकार का सारांश डालते हुए कुछ खंड खर्च करने जा रहे हैं। अब, सबसे पहले, निश्चित रूप से, हम अय्यूब पर एक नज़र डालने जा रहे हैं, और फिर हम दुनिया पर नज़र डालने जा रहे हैं और अय्यूब की पुस्तक में दुनिया को कैसे समझा जाता है। और फिर, अंततः, हम अय्यूब की पुस्तक में परमेश्वर पर एक नज़र डालेंगे। तो ये कुछ ऐसे खंड हैं जो सामने आ रहे हैं।

#### **पुस्तक में अय्यूब की भूमिका [00:45-2:00]**

तो, आइए अय्यूब पर एक नज़र डालें और पुस्तक में और पुस्तक के संदेश में उसकी भूमिका को संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास करें। अय्यूब की भूमिका पुस्तक की समस्या को प्रस्तुत करना है। उनकी भूमिका वह उत्तर देने की नहीं है जो पुस्तक प्रस्तुत करती है। उनके दृष्टिकोण पीड़ा पर प्रतिक्रिया करने का एक और गलत तरीका दर्शाते हैं। वह अपर्याप्त ज्ञान का भी चित्रण करता है। उसकी सराहना इस बात के लिए नहीं की जाती है कि वह किस प्रकार पीड़ा के प्रति प्रतिक्रिया करता है, बल्कि उसकी धार्मिकता की गुणवत्ता और प्रेरणा तथा अंततः उसके त्याग के लिए की जाती है। वह क्यों पीड़ित है, इस बारे में उसके विचार, ईश्वर अन्यायी है, और अपने दर्द के इलाज के लिए उसका नुस्खा ईश्वर का सामना करना है। वे दोनों गलत हैं। इसलिए, हमें सावधान रहना होगा कि हम नौकरी की किताब में उससे अपना नेतृत्व लेने की उम्मीद में न आएं।

#### **अय्यूब की धार्मिकता [2:00-3:03]**

अब, उसकी धार्मिकता, वह धार्मिकता है जो किसी को उसके आसपास की दुनिया से अलग करती है। वह अय्यूब 31 है, जब अय्यूब अपनी बेगुनाही की शपथ लेता है, तो वह एक तरह से वर्णन करता है कि वह अपनी धार्मिकता को कैसे समझता है। तो, यह पूर्ण धार्मिकता नहीं है, जैसा कि भगवान की नज़र में, कोई

भी धर्मी नहीं है जैसा कि भजन हमें बताते हैं। परन्तु इस प्रकार की धार्मिकता तुम्हें संसार से अलग करती है। यह वास्तव में लाभ के विपरीत पुस्तक में खड़ा है।

यही वह बिंदु है जिसमें अय्यूब की रुचि है, उसकी धार्मिकता में, न कि लाभों में। वह धार्मिकता की बहुत दृढ़ता से रक्षा करता है। क्या अय्यूब अंततः इस बात में दिलचस्पी रखता है कि उसे अपने धर्मी व्यवहार से क्या हासिल होगा, या वैकल्पिक रूप से, क्या उसके धर्मी व्यवहार का लाभ की परवाह किए बिना स्वतंत्र मूल्य है? और, निःसंदेह, वह ऐसे ही चलता है।

### **अय्यूब धर्मी क्यों है? [3:03-3:45]**

यदि उसकी धार्मिकता संभावित लाभ से प्रेरित नहीं है, तो उसे क्या प्रेरित करता है? अय्यूब धर्मी क्यों है? पाठ वास्तव में कुछ नहीं कहता है क्योंकि इसकी अधिकतर रुचि यह स्थापित करने में है कि लाभ प्रेरक है या नहीं, यदि लाभ प्रेरक नहीं है, तो इसने अपनी बात रख दी है।

अय्यूब पूर्ण होने का दावा नहीं कर रहा है। पुस्तक उसे पूर्ण के रूप में नहीं पहचानती। वह केवल उन अपराधों के लिए निर्दोष घोषित होना चाहता है जो उसके नाटकीय पतन का कारण बने। यह अय्यूब की अपनी धार्मिकता में रुचि है।

### **अय्यूब की धर्मपरायणता - क्षुद्र? [3:45-7:45]**

आइए हम धर्मपरायणता में उनकी रुचि की ओर वापस मुड़ें। हमने इस बारे में पहले भी बात की है, अध्याय एक में छंद चार और पांच के हमारे उपचार के दौरान। मैं अनुष्ठान प्रदर्शन के बारे में बात करने के लिए "धर्मपरायणता" शब्द का उपयोग कर रहा हूँ क्योंकि प्राचीन दुनिया में इसके बारे में इसी तरह सोचा जाता था। याद रखें, यह महान सहजीवन--लाड़-प्यार वाले देवताओं से जुड़ा है। तो, धर्मपरायणता वे अनुष्ठान क्रियाएँ हैं जो देवताओं को प्रसन्न करने के लिए महान सहजीवन प्रणाली में काम करती हैं। उस प्रकार की धर्मपरायणता देवताओं के नाजुक अहंकार और उनकी अस्थिरता के विरुद्ध बीमा थी। इस अर्थ में, धर्मपरायणता, धार्मिकता के लिए परस्पर अनन्य नहीं है, बल्कि प्राचीन दुनिया के अधिकांश हिस्सों में देवताओं के साथ अच्छी स्थिति में बने रहने के लिए आवश्यक थी। आपको बस इस अनुष्ठान प्रदर्शन की आवश्यकता थी। पूरी किताब में, अय्यूब की स्थिति को सुधारने के लिए आवश्यक प्रतिक्रिया के रूप में धर्मपरायणता को कभी भी प्रस्तावित नहीं किया गया, यहाँ तक कि उसके दोस्तों द्वारा भी नहीं। उन्होंने कभी यह सुझाव नहीं दिया कि अनुष्ठान करने से उनकी समस्या का समाधान हो जाएगा।

लेकिन महान सहजीवन उसकी धार्मिकता और उसकी धर्मपरायणता के लिए अनुमानित प्रेरणा है। अर्थात्, वह ऐसा अपने लाभ के लिए कर रहा है। धर्मपरायणता को समस्या के भाग या समाधान के भाग के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता है। यह बातचीत से अजीब तरह से अनुपस्थित है। यह, फिर से, हमारा ध्यान अय्यूब अध्याय एक, श्लोक चार और पाँच में इसकी प्रमुखता की ओर आकर्षित करता है। अय्यूब अपने बच्चों की ओर से बलिदान देता है, यदि उन्होंने कोई गंभीर, फिर भी अनजाने में, अपराध किया हो। यह दर्शाता है कि अय्यूब किसी गलती के प्रति औपचारिक रूप से कर्तव्यनिष्ठ है। हालाँकि पुस्तक इस बात से चिंतित नहीं है कि वह पर्याप्त रूप से पवित्र है या नहीं, और फिर, जैसा कि हमने पहले बात की थी, मुझे लगता है कि यह इसके बजाय एक संभावित भेद्यता को व्यक्त करती है।

जैसे-जैसे किताब सामने आती है, अय्यूब बार-बार अदालत में भगवान का सामना करने के लिए एक मध्यस्थ, एक वकील को शामिल करने की कोशिश करता है। उन्होंने स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकाला है कि भगवान को क्षुद्र होना चाहिए, धार्मिकता के साथ धार्मिकता का दौरा करना, मुझे खेद है, तकनीकी रूप से तीव्र पीड़ा और दुर्भाग्य के साथ। अय्यूब की अत्यधिक कर्तव्यनिष्ठ परंपरा स्वर्ग के दृश्य तक पुल प्रदान करती है। यह संभव है कि चुनौती देने वाले का सुझाव अय्यूब की धार्मिक धार्मिकता के संभावित निहितार्थों पर भी आधारित हो। यदि अय्यूब को यह संदेह है कि ईश्वर क्षुद्र होने की ओर प्रवृत्त है, इस हद तक कि वह ऐसी अल्प संभावनाओं के आधार पर इन कठिन अनुष्ठानों में संलग्न है, तो यह अनुमान लगाया जा सकता है कि अय्यूब न केवल अपनी धर्मपरायणता में, बल्कि अपनी धार्मिकता में भी भय से प्रेरित है। एक अनुचित और मनमौजी देवता के हमले का निशाना बनना।

यदि अय्यूब धर्मपरायणता के लिए प्रेरित होता है क्योंकि वह ईश्वर को तुच्छ मानता है, तो क्या यह भी संभव नहीं है कि अय्यूब धार्मिकता के लिए प्रेरित होता है क्योंकि वह मानता है कि ईश्वर की कृपा नीलामी पर है। चुनौती देने वाले के पास यह विश्वास करने का अच्छा कारण है कि अय्यूब महान सहजीवन की सीमा के भीतर कार्य कर सकता है और इसलिए इस मुद्दे को भगवान के सामने उठाना उचित है। चैलेंजर का सुझाव तब द्वेष का कार्य नहीं बल्कि एक तार्किक निष्कर्ष है।

### **अय्यूब की सत्यनिष्ठा [7:45-8:22]**

तो, अय्यूब की सत्यनिष्ठा यह है कि अय्यूब परमेश्वर या उसकी नीतियों के बारे में अपने आकलन में न तो सही है और न ही सही है। लेकिन एक चीज़ जो वह सही कर लेता है, वह है कि वह अपनी ईमानदारी

बरकरार रखता है। पुनः, अध्याय 27 में, श्लोक दो से छह तक यह तब पूरा होता है जब यह प्रदर्शित होता है कि वास्तव में अय्यूब बिना किसी शुल्क के परमेश्वर की सेवा करता है। यही उनकी ईमानदारी है।

यदि अय्यूब अपनी पत्नी या मित्रों की सलाह मानता, तो यह प्रदर्शित होता कि उसने परमेश्वर की सेवा व्यर्थ नहीं की। उसकी ईमानदारी जप्त कर ली जाएगी।

### **आत्म-धर्म के रूप में नौकरी [8:22-9:29]**

अय्यूब को आत्म-धर्म भी देखा जाता है, विशेषकर एलीहू की जांच के तहत। केवल इसलिए स्व-धर्म होना उचित नहीं है कि कोई व्यक्ति धर्म है, और यही सच्चा अय्यूब भी है। उसकी स्व-धार्मिकता एक समस्या है क्योंकि वह इसे स्वयं को ईश्वर से ऊँचा स्थापित करने के साधन के रूप में उपयोग करता है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब अय्यूब का अपनी धार्मिकता के प्रति दृष्टिकोण इतना आश्वस्त होता है कि वह इसे बनाए रखने के लिए परमेश्वर के न्याय को बदनाम करने के लिए तैयार हो जाता है। और, निस्संदेह, अध्याय 40, श्लोक आठ में भगवान के शब्द बताते हैं कि वास्तव में यही हुआ था।

इसलिए, अय्यूब पुस्तक में कई मामलों में एक व्यक्ति के रूप में विफल रहता है। वह एक ऐसा लड़का है जिसके पास बहुत कुछ है और वह कुछ महत्वपूर्ण चीजें सही ढंग से करता है। लेकिन वह बहुत सारी गलतियाँ भी करता है।

### **यह पुस्तक ईश्वर द्वारा हमें बेहतर उत्तरों की ओर ले जाने के बारे में है [9:29-11:20]**

और इसलिए फिर से, हमें यह याद रखना होगा कि एक चरित्र के रूप में अय्यूब पुस्तक का फोकस नहीं है। किताब ईश्वर के बारे में है, अय्यूब के बारे में नहीं। अय्यूब की प्रतिक्रियाएँ हमारे लिए आदर्श नहीं हैं। उसकी सराहना करने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन जिस तरह से वह अपनी स्थिति पर प्रतिक्रिया करता है, उसमें भी बहुत कुछ ऐसा है जिस पर उसकी निंदा की जाती है। अय्यूब किताब का एक और पात्र है जो गलतियाँ करता है।

किताब हमें यह बताना चाहती है कि चीजों को कैसे सही किया जाए। अय्यूब किताब में एक ऐसा पात्र है जिसके पास चीजों को सही करने की सबसे अधिक संभावना है। क्योंकि उसकी धार्मिकता स्वीकृत और मान्यता प्राप्त है, लेकिन चीजों को सही तरीके से करने की इतनी उच्च मान्यता वाला व्यक्ति भी चीजें टूटने पर हमेशा अच्छी प्रतिक्रिया नहीं देता है। यह पुस्तक हमें चीजें गलत होने पर बेहतर प्रतिक्रिया की ओर ले जाना चाहती है, विशेषकर ईश्वर के बारे में कैसे सोचें। इन सबके मामले में अय्यूब एक अच्छा मॉडल नहीं

है। और इसलिए, वह इस बात का हिस्सा है कि किताब कैसे अपना संदेश प्रकट करती है। हमें किताब के संदेश को सीखने की ज़रूरत है, न कि अय्यूब को ऊँचे स्थान पर रखने की।

हम अगली बार अपना ध्यान दुनिया की ओर केंद्रित करने जा रहे हैं। तो यह अगला खंड होगा कि दुनिया पुस्तक में अपनी भूमिका कैसे निभाती है।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 24 है, नौकरी की किताब में नौकरी। [11:20]